सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | सितम्बर-अक्तूबर, 2012

शाश्वत मित्र - यीशु मसीह

भला है कि एक ऐसा कोई है, न बदलने वाला और साथ है जो सदा;
भला है कि एक ऐसी चट्टान है, जीवन रुपी सागर की लहरों बीच स्थिर खड़ी।

हे मेरे मन! जंग लगे, कीड़ों से नष्ट-क्षय निधि पर अपना मोह न लगा;
परन्तु उस पर मन अपना बसा, विश्वास-पात्र है वह जो अपने साथ रहे सर्वदा।

हरदम बदलतादलदली है ये जग बेईमान, उस पर न बना अपना बसेरा;
किन्तु मुसलाधार बारिश या दहाड़ती बाढ़ में भी अचल, वह चट्टान ही रहे आशा तुम्हारी।

एक मात्र पेटी है सुरक्षित, उसी में संजो अपनी धन-दौलत;

शाश्वत मित्र ... पृष्ठ ३ पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती
STAR UTSAV
चैनल पर
*हर **शनिवार सुबह 8:30** से **9:00** बजे*

परमेश्वर और एक-दूसरे से प्रेम करना

बीस साल बाद यहाँ दोनों भाइयों का आमना-सामना होता है। एसाव पहले ही, अपने पिता की मृत्यु के बाद, बदला लेकर ही दम लेने का विचार कर चुका था। हाँलाकि उसका पिता अब भी जिन्दा है, लेकिन उसे लगा कि अब वह वक्त आ चुका है। बीस साल की कड़ुवाहट को अंजाम देने का मौका मिलने वाला है। अगर एक दिन के लिए भी किसी कारण, किसी के प्रति आप अपने हृदय में कड़ुवाहट रखते हो, तो आपका आध्यात्मिक तन्त्र जहरीला हो जायेगा। आपको शायद लगे की आप अपनी जगह पूरी तरह से सही हो। मगर बाइबल कहता है, 'तुम्हारा क्रोध सूर्य अस्त होने तक बना न रहे।' (इफिसियों 4:26) वह परमेश्वर का नियम है। हम परमेश्वर के नियम का पालन क्यों नहीं करते? हम परमेश्वर से क्यों नहीं डरते? - हमारी घमंड की वजह से। किसी भाई या बहन से क्षमा माँगना, क्यों इतना कठिन लगता है? हम कब इतना सिद्ध बन गये है कि हम अपने आप को अचूक समझते है?

वह एक घमंड भरा हृदय ही है जो परमेश्वर की उपस्थिति को खोने के लिए भी तैयार रहता है। क्या यह भयानक बात नही? कोई भी जो परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द उठाता है कहता है 'अपना जीवन खोना पड़े, फिर भी मैं परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित नहीं रह पाऊँगा।' जब आप आत्मिक रूप से असंवेदनशील बन जाते है, कई चीजें आपके मन में बैठने लगती हैं। कूड़ा-करकट जमा होने लगता है। दुर्भाव, विद्वेष, बुरे विचार ऐसी अभिलाषायें जो परमेश्वर की इच्छा के बाहर है - यह सब चीजें जमा हो जाती हैं।

हमने यह सीखा कि झूठ ना बोलें। चोरी ना करें। हमने यह सीखा कि बुरा कहने वाले ना बनें और परमेश्वर को दशमांश और भेंट चढ़ाये। यह भी सीखा कि प्रार्थना करें और परमेश्वर को जो समय देना चाहिए दे दें। मगर जो अत्यंत महत्वपूर्ण बातें है, हम उसमें चूक रहें है। शैतान का यह चाल कि हमारे एक-दूसरे के आपस में जो संबन्ध है उसमें खलबली मचाये।

साधारणतः दुनिया में हर जगह, लोग ससुराल वालों से तनाव में रहते है। आध्यात्मिक व्यक्ति कौन है? वह जो वैवाहिक संबंधियों के संबन्ध में विजयी हो। उकसाने की बात चाहे कुछ भी हो मगर एक आध्यात्मिक व्यक्ति हमेशा उस पर विजय पाता है। क्या हम एक दूसरे के साथ आपस में पूर्ण-शान्ति से जी रहें है?

जिन्दगी में हमेशा सरल और सुगम परिस्थितियाँ नहीं रहतीं। साधारणतः याकूब जैसे चतुर लोग जो हमको चिड़चिड़ाते है, उनका सामना करना पड़ सकता है। और चालाकी में वह आपको हरा दें। ऐसे व्यक्ति के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? एसाव एक ऐसा असिद्ध और अनाज्ञाकारी व्यक्ति है कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया। मगर इस परिस्थिति में, अश्चर्य की बात है कि वह कितना सफल रहा है। उसने अपने भाई को चूमा और लगभग भटके हुए बेटे के पिता जैसा व्यवहार करता है। इस आदमी के हृदय से क्षमा से भरे वचन निकलते है।

'परमेश्वर को कभी किसी ने नही देखा, यदि हम एक दूसरे से प्रेम करे तो परमेश्वर हम में बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिद्ध होता है।' (I यूहन्ना 4:12) मैं चाहता हूँ कि हर कोई जो हमारे आराधना स्थलों में प्रवेश करते है परमेश्वर के प्रेम के वातावरण का आभास करें। परमेश्वर हम में बना रहे। यह बात हम कैसे जाने? उस साकार प्रेम से जो हमारे आपस में है। डाँटने पर यह प्रेम चूर-चूर नहीं होता है। नहीं, वह एक नियमित बहने वाली धारा है। क्या आप एक नदी को रोक पाओगे? एक नदी के बहाव को रोकने के लिए कितने विशाल बाँध का निर्माण करना पडता है? कई बार ऐसे बाँध भी बह जाते है। परमेश्वर के प्रेम के बहाव को रोकने वाले हम में से कोई ना बने। वह बहुत गलत होगा, फिर भी वह संभव है। और शैतान ठीक वही चाहता है। मान लीजिए कि अगर किसी नहर से पानी बह नही पाता तो क्या होता है? वहाँ का पूरा इलाका मुश्किल में पड़ जाता है। वहाँ कोई फसल नहीं उगेगी। क्या प्रेम की उस धारा के बहने में आपके कारण बाधा हो रही है? आप अपने हृदय की जाँच करे।

प्रभु यीशु ने हमको एक सरल नियम दिया है, 'यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए और वहाँ तुझे स्मरण आए कि मेरे भाई को मुझ से कोई शिकायत है, तो अपनी भेंट वेदी के सामने छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मेल कर ले और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।' (मत्ती 5:23,24) मैंने कुछ भाइयों से एक, दो नहीं, तीन नहीं, मगर चार दफा माफी माँगी है। मुझे पक्का विश्वास है कि गलती मेरी नहीं है। मगर किसी अनजान विषय में मैंने उसको ठेस पहुँचाई है। इसलिए मैं उनसे माफी माँगता हूँ। अगर जरूरत पड़े कई दफा माफी माँगता हूँ। मैं नहीं चाहता कि प्रेम की नदी जो मेरे मन से बहती है वह रुके। मैं परमेश्वर की सन्निधी को खोना नही चाहता। प्रिय जनों अत्यंत सावधान रहो।

अगर आप परमेश्वर में बने रहना चाहते तो आपको प्यार में भी बने रहना पड़ेगा। अगर आप प्यार में बने न रहे, तो आप परमेश्वर में भी बने नहीं रह सकते। आप सिर्फ एक व्यवस्था से जुडे हुए हो और परमेश्वर से नही; यह कितनी भयानक बात है। जब आप परमेश्वर में न बने रहे, तो कोई अच्छे काम आप से नही हो पाएँगे। सिर्फ बुराई, बुरे वचन, बुरे विचार, सब बुरे क्रिया-प्रतिक्रियायें ही आपसे पैदा होंगी। जहर और कालिस ही आपसे निकलेगी। मगर जब आप परमेश्वर में बने रहते हो, तो प्रेम में भी बने रहोगे।

आप कहाँ हो? क्या आप कम से कम एसाव की स्थिति में हो कि अपने भाई को जिसने तुम को चोट पहुँचाई है, उसको माफ करके उससे प्यार कर सको? जब इसहाक की मौत हुई तब एसाव और याकूब दोनों ने मिलकर उनको दफनाया था। क्या हम उस स्तर पर हैं जहाँ हम पवित्र बनकर मेलमिलाप करने के लिए तैयार हैं? हम अपने आप को दीन करें। अपने हृदय जाँचे और यह सावधानी बरतें कि हम संजीवन (आत्मिक जागृति) को न रोकें।

- जोशुआ दानिय्येल।

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

शाश्वत मित्र ... पृष्ठ 1 से

जहाँ से खोये नहीं कभी कुछ निश्चित, हे मेरे मन, मान ले मेरी बात।

मसीह में अपना सर्वस्व जमा, संजोए सारे मन के भाव, उसी में जो साकार; उनकी विशेषता में बनी रहे आपकी आशा, उनका प्रभावपूर्ण लहू बने आपका आधार।

उनकी उपस्थिति ही बने आपकी सारी खुशी, फिर नुकसान पर आये हँसी; तब विनाश को भी दे पायें चुनौती, जब अपना सर्वस्व बने मसीह।

इस दुनिया के बगीचे में खिले फूल सारे, याद रहे - मुरझायेंगे सारे जब आये अपनी बारी;
फिर ऐसा दिन आयेगा जब कुछ न बचा रहे, विरान रह जाये धरती और काली।

शामक बनकर आये मृत्यु काली, आना ही होगा उसे बुझाने अपनी मोमबत्ती;
कितनी मधुर है वह रोशनी सूरज की, फैलती ही हो जबकि बुझ गयी बत्ती।

आना है जल्द वह अंधकार बाढ़ की तरह, आपका सर्वस्व है और आप हो - बीच में वह बहाव;
तब आपके दिल का करो विवाह उनसे, जो साथ न छोडे कभी ऐसा उनका लगाव।

उन्हीं के हाथो सौंप दे अपने आपको, मृत्यु का हिलोरा प्रवाह में भी साथ जो चले;
उस पार स्वर्गीय तट पर सुरक्षित पहुँचाये, तब सदा के लिए स्वर्गीय स्थानों में अपने साथ बैठाये।

मित्र जो भाई से भी बढ़कर साथ दे, अपना रहस्य जाकर उनसे कह दें; हे, दुःखी श्राप के सन्तान, निकल पड़ो अभी उठके।

जो आपसे कभी अलग न हो, अपनी समस्त चिंता उसी पर डाल दे; वह जो आपको साथ छोड़ने न दे, और स्वयं कभी जो साथ न छोड़े।

कल और आज और युगानुयुग एक सा जो है, वह यीशु मसीह है।
- चर्ल्स स्पर्जन

शराब की लत के शिकंजे से छुड़ाया गया
(मार्क रायडिंस्की की गवाही)

जब मैं जवान था, मैंने मूर्खता में अपने जीवन को बिताया, यद्यपि मैं सोचता था कि काम के बाद अपने दोस्तों के साथ मिलकर शराब पीना बहुत अच्छा है। वास्तव में मेरी पत्नी को यह पसन्द नहीं था क्यों कि में अक्सर लड़खड़ाते हुए घर पहुँचता था।

1972 में मैंने अपना जीवन प्रभु यीशु मसीह को दिया। एक नये मसीही होने के नाते, हमें मालूम नहीं था कि हम क्या करें। सो एक नये विश्वासी के समान, मैं वही करता जो आमतौर पर मुझे करना ठीक लगता। मैं काम से घर आता और अपनी आदत के अनुसार कार मधुशाला की ओर मुड़ जाती। मैं किसी तरह भी अपने स्टियरिंग ह्वील को काबू नहीं कर पाता था। अपना जीवन यीशु मसीह को सौंपने के कारण मुझे महसूस होता कि मैं जो कर रहा था, वह गलत था। पर मुझे नहीं मालूम था कि इस पर कैसे विजय पाऊँ।

सच यह था कि शराब पीना मेरे जीवन का एक सामान्य भाग बन चुका था। इसलिए मेरे लिए यह समझना कठिन था कि मेरी यह आदत गलत थी। जब मैं लड़का ही था, मेरे पिता साउथ बैंड, इंडियाना में तीन शराबखाने चलाते थे। सो पीना मेरे जीवन का एक अभिन्न भाग बन गया था। वास्तव में मेरे पिता ने ऐसी जीवनशैली बना ली थी जिसमें मुझे शराब पीने में कुछ गलत नजर नहीं आता था। ऐसा होते हुए भी परमेश्वर की पकड़ मुझ पर थी, सो हर बार शराब पीने के बाद अपने को इतना दोषी महसूस करता था कि घर में शराब की बोतल छिपाने के लिए जगह ढूंढता पर मेरी पत्नी को मेरा नजर बचा के पीना पसन्द नहीं था। सो वह कहा करती थी, 'मार्क, आप क्यों उस बोतल को यहाँ रसोईघर की अलमारी में नहीं रखते देते? फिर आपको पीने कि लिए नीचे जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुझे मालूम है कि आप अब भी पीते हैं।'

पर मैं शर्मिंदा था। यह बात मुझे परेशान करती थी फिर भी मैं पीना बंद नहीं कर पा रहा था। अपने भरसक प्रयास से कोई उपाय न मिला। मेरे पास्टर ने भी मेरी मदद की, पर मुझे लगता है उन्हें इसकी जड़ के बारे में मालूम नहीं था।

और तब 1978 में हमने सुना कि एक मिशनरी, रेव्ह. जोशुआ दानिय्येल हमारे चर्च में आ रहे हैं। कई लोग थे जिन्हें रात में चर्च जाना पसंद नहीं था, मैं भी उनमें से एक था। रविवार का दिन अच्छा था, पर

सत्य की परख

"हे मेरे पुत्र, मेरी बातों को मान, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख ले।"

(नीति वचन 7:1)

किसी दूसरे समय मुझे चर्च जाना पसंद नहीं था। पर किसी भी तरह, रेव्ह. दानिय्येल आये और चाहे कोई भी कारण हो, और कितनी भी शराब मैंने दिनभर में पी हो, मैं उन रातों को चर्च में हो रही सभाओं में उपस्थित रहा। रेव्ह. दानिय्येल संदेश में जो कहते वह मेरे मन की गहराई में जाता। उन के शब्द चुम्बक की तरह थे, प्रभु हर रात मुझे वहाँ खींच रहे थे।

सप्ताह के अंत में, हमारे पास्टर ने रेव्ह. दानिय्येल से बातें की और कहा, 'इस कलीसिया में एक भाई है जिसे मदद की जरूरत है। यदि आप किसी तरह उनसे मिल सकें तो मैं बड़ा आभार मानूँगा।' सो हमारे पास्टर ने हमसे पूछा कि क्या हमें यह पसंद होगा कि रेव्ह. दानिय्येल हमारे घर पर आयें। हमें लोगों के साथ समय बिताना अच्छा लगता था, तो यह सोच कर कि हमें उनका साथ पसन्द आयेगा, हमने हामी भर दी।

सो जब रेव्ह. दानिय्येल शाम को पास्टर के साथ आये, मेरी पत्नी ने उन्हें सेवेन अप या एक ठंडा पेय दिया। पर उन्होंने कहा, 'नही बहन। मैं यहाँ काम से आया हूँ।' तब उन्होंने मुझसे कहा, 'क्या में आपकी समस्या जान सकता हूँ।'

और सुनने के बाद उन्होंने कहा, 'ज़रूर, आपके जीवन में अवश्य ही कुछ ऐसा होगा, जो आपके और प्रभु के बीच में अड़चन है, वही आपको पीछे खींच रहा है। हमें इसे खोजना होगा कि वह क्या है।'

सो रेव्ह. दानिय्येल मुझे मटर की क्यारी में ले गये कि व्यक्तिगत तौर पर बात कर सकें। अन्ततः यह प्रगट हुआ कि मैं एक शराबखाने का परिचारक (वेटर) रह चुका था, उन्होंने मुझसे कहा, 'क्या आपने उन परिवारों से क्षमा मांगी है जो इस शराबखाने में आते थे और आपने उनको कितनी शराब पिलाई थी? क्या आपने उनसे कभी क्षमा मांगी थी?

मैंने कहा, 'परिवारों से क्षमा मांगना? जोशुआ, यह संभव नहीं है। बहुत से लोगों को मैं जानता तक भी नहीं। मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता।'

जोशुआ ने कहा, 'क्या आपने कभी परमेश्वर से इस बारे में क्षमा मांगी थी?' मैंने कहा 'नहीं, वास्तव में कभी नहीं।' उन्होंने कहा, 'क्या आप अपने घुटने टेक कर परमेश्वर से इस बात को कबूल कर क्षमा मांगने के लिए प्रार्थना करेंगे?'

जीवन के लिए पश्चाताप -

सो उस रात मैंने अपने घुटने टेके और परमेश्वर से क्षमा मांगी कि मैं एक शराबखाने का परिचारक रहा और इस कारण बहुत से परिवार के लोगों के पतन का कारण था। मुझे पीते देखकर दूसरे भी मेरे कारण ऐसा करते थे। इससे पहले कि मैं अपने घुटनों से उठूँ, मैंने अपने शरीर में कुछ असर होते हुए महसूस किया, जिसने मुझे पूरी तरह से बदल दिया। मुझे तुरंत ही शराब की लत से छुटकारा मिला। उसी क्षण से, मेरे अंदर शराब के लिए कोई रुचि नही रह गई। यहाँ तक कि शराब की उपस्थिति भी मुझे एक घूंट लेने को विचलित नहीं कर सकती थी। परमेश्वर मुझे संभाल रहे थे।

सेवकाई के लिए बुलाहट -

एक साल बाद, मैं शाम की एक सभा में गया। वहाँ एक चॉक कलाकार था जो चॉक से बाइबल संबंधी तस्वीरें बना कर प्रभु की सेवा कर रहा था। प्रभु ने मुझे याद दिलाया कि शराब की लत पड़ने से पहले मैं कैसे अच्छी तस्वीरें बनाया करता था लेकिन शराब की लत पड़ने के बाद मुझसे तस्वीरें बन नहीं पाती थीं। अब परमेश्वर ने मुझे पूरी तरह छुटकारा दे एक नया जीवन दिया और परमेश्वर ने मुझसे एक चॉक आर्टिस्ट (कलाकार) की तरह सेवकाई आरंभ करने को कहा। सो मैं और मेरी पत्नी दोनों ने मिलकर एक सुन्दर सेवकाई बहुत वर्षों तक की। हम बहुत से राज्यों, चर्चों और बहुत सी प्रार्थना सभाओं में गये। मैं वहां बाइबल से संबंधित चित्रों को बनाता और मैं अपनी गवाही भी देता कि कैसे प्रभु ने मुझे शराब की लत से छुटकारा दिया। बहुत बार मुझे क्लब में निमंत्रित किया जाता जहाँ लोग परमेश्वर का वचन सुनना नहीं चाहते थे। मैं हमेशा कहा करता, 'हाँ, मुझे आपके पास आना पसंद है, बशर्ते आप मुझे पहले अपनी गवाही देने की अनुमति दें।' सो वे हमेशा ही इससे सहमत होते थे कि मैं अपनी गवाही दूँ। वही मैं करता, अपनी गवाही देता और चित्र बनाता था। जब मैं पीछे मुड़कर अपने जीवन को देखता हूँ, मैं प्रभु को बहुत धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे पूरी तरह आज़ाद किया और उनकी सेवा

मध्यस्थता की प्रार्थना करने वाले माँ-बाप

जब जब भोजों के दिनों का क्रम समाप्त हो जाता तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और बड़े तड़के उठकर उन सब की गिनती के अनुसार होमबली चढ़ता था, क्यों कि अय्यूब सोचता था, 'सम्भवतः मेरे पुत्रों ने पाप किया हो और अपने मन में परमेश्वर की निन्दा की हो।' अय्यूब निरन्तर इसी प्रकार किया करता था। (अय्यूब 1:5)

एक आदमी की कैसी सुन्दर तस्वीर जिसके मन में परमेश्वर का भय निवास करता हो! अय्यूब डरता था कि कही उनके पुत्रों ने पाप किया हो और अपने मन में परमेश्वर की निन्दा की हो। वह मानवीय कमजोरियों के बारे में गहरे रूप से सचेत था। वह इतना सचेत था, हाँलाकि उनकी जिन्दगी के, किसी विशेष पाप के बारे में वह नही जानता था, फिर भी बहकावे की हालतों से गुजरने की सोच से भी, वह डरता था। माँ-बाप होने की जिम्मेवारी और विशेषाधिकार को उन्होंने पूरी तरह से समझा। इसीलिए उन्होंने यह जिम्मेवारी ली कि नियमित रूप से जरूरत के अनुसार होमबलि चढ़ायें।

जहाँ तक अय्यूब की जिन्दगी में धीरज और विश्वास का सवाल है, इस विवरण के बगैर भी अय्यूब की पुस्तक अधूरी न रहती। मगर परमेश्वर के प्रति माता-पिता के समर्पण में, पारिवारिक जीवन भी शामिल है। आजकल हम इस विशेष सीख के अभाव को अनुभव करते। उस पाठ का अध्ययन करें जो उनकी जिन्दगी का उदाहरण, हमें सिखाता है।

अपने या अपने बच्चे में जो पाप है उस को नजरअंदाज हो जाने का गहरा भय, एक बुद्धिमान मसीही का पहचान है। पाप के विषय में हमारा विचार कई बार कितना ऊपरी है और उसे हल्का मान लेते है। और हम कितनी आसानी से संतृप्त हो जाते है। जो बाहर से अच्छाई और प्यार दिखता है उस ने भी पाप छिपा हुआ हो सकता है। अपने दिलों में परमेश्वर को त्याग कर हमारे बच्चें उम्र में बढ़ते होंगे! माँ-बाप परमेश्वर से माँगे कि वे उनको सही ज्ञान दे कि बच्चों में क्या पाप है – उसके फलस्वरूप जो श्राप आता है, उसकी ताकत और उस पाप से जो निरादर परमेश्वर को पहुँचता है, समझ कर बच्चों को सिखा सकें।

सोच-समझ रखने वाले हर माँ-बाप जानते है कि ऐसे समय और स्थान हैं जहाँ उनके बच्चों का प्रलोभन में गिरने का ज्यादा मौका है। प्रार्थना करने वाले माता-पिता को वही करना चाहिए जो अय्यूब ने किया। उन्होंने अपने पुत्रों को बुलाया; और उनके लिए प्रार्थना की।

बीच बचाव की, प्रार्थना ही माँ-बाप का सामर्थ्य और आशीष का रहस्य है। उनको सच्चाई से प्रार्थना करनी है कि परमेश्वर उनको ज्ञान दे कि कैसे वे अपने बच्चों के लिए लगातार प्रार्थना में बने रहें। हमारे पारिवारिक जीवन में, व्यक्तिगत सुख या दैनिक जरूरतों को पूरा करने की चिन्ता - इन बातों को ज्यादा महत्व न दे। बल्कि उनके अनुग्रह में सेवक बनने के लिए अपने आप को समर्पण करने की, ताकि परमेश्वर के अनन्तकालीन उद्देश्य पूरा हो: 'हमारे बच्चें पाप से छुटकारा पाये।' तब हमारा परिवार सदा, स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति से प्रकाशित और स्वर्गीय आनन्द से प्रसन्न घर बना रहेगा।

- एन्ड्रू मरे।

एक नन्ही पुस्तिका

अमेरिका में, एक नदी को पार करने का प्रयास करते डॉ.कोफ गहरे पानी में पहुँच गये। वे और उनका घोड़ा तेज प्रवाह में बहे जा रहे थे और हालत काफी खतरनाक थी। तब एक डाली को पकड़कर, किसी तरह बहुत मुश्किल से वह तट पर पहुँचे। मगर उसका घोड़ा प्रवाह के साथ बह गया। धूप में अपने कपड़े सुखाने के बाद वह पैदल चल पड़े। कुछ दूर चलने के बाद एक आदमी से मिले जिसने उनको नजदीकी गाँव का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि वहाँ किसी श्रीमती .. का पता लगाये। उन्हें इस बात का ज़रा सा भी सन्देह न था कि वहाँ उनकी अच्छी खातिरदारी होगी।

डॉ.कोक ने उस भली औरत का घर ढूंढ़ लिया। जितना उससे बन सका उसने डॉ कोक की अच्छी देखभाल की। उनके घोडे को ढूँढ़ने के लिए लोगों को भेजा गया, जो मिलने पर वापस लाया गया। अगली सुबह अपनी सहृदय मेजबान से विदा लेकर वे फिर आगे अपने सफर पर निकल पड़े।

पाँच साल बीत जाने के बाद, डॉ. कोक का फिर अमेरिका जाना तय हुआ। वहाँ आयोजित किसी वार्षिक संम्मेलन में भाग लेने जाते रास्ते में उनके साथ तीस और लोग थे। उनमें से एक नौजवान ने आकर उनसे बात करने की इज़ाजत माँगी। मसीही विनम्रता के साथ उन्होंने सहमति दी।

इस नौजवान ने पूछा कि क्या उन्हें याद है कि लगभग पाँच साल पहले वे अमेरिका के किसी क्षेत्र में वे आये। उन्होंने हामी भरी।

'श्रीमान क्या आप को याद है आप ने एक नदी को पार करने की कोशिश की और डूबने ही वाले थे?'

'हाँ, मुझे अच्छी तरह से याद है।'

'और क्या आप को याद है आप किसी गाँव में एक विधवा के घर में ठहरे थे?'

'मुझे पूरा याद है,' डॉक्टर ने कहा; 'और मैं उनकी मेहरबानी को कभी नहीं भूल पाऊँगा।'

'और क्या आपको याद है, जब आप वहाँ से निकल रहे थे तो उस औरत के घर में आपने एक पुस्तिका छोड़ी थी?'

'ऐसा तो मुझे याद नहीं आ रहा,' उन्होंने कहा, 'मगर सम्भव है, क्योंकि मैं अकसर ऐसा करता हूँ।'
'हाँ, सर,' नौजवान ने कहा, 'आपने एक पर्ची छोड़ी थी, जिसको उस स्त्री ने पढ़ा। और उसके पढ़ने पर प्रभु की आशीष से उसने अपना मन फिराया, और उसको पढ़ने के कारण ही उनके कई बच्चे और पड़ोसी भी परमेश्वर की ओर फिरे; और अब उस गाँव में, एक बढ़ता छोटा सा समूह भी है।'

डॉ. कोक की आखों में आँसू उनके मन के भावों को व्यक्त कर रहे थे। नौजवान ने आगे कहा, 'महाशय मैंने आपको पूरी बात अभी तक नहीं बताई। मैं उस स्त्री के बच्चों में से एक हूँ। मैं अपने मनफिराव का कारण परमेश्वर को ठहरता हूँ। उस पर्ची को पढ़ते समय मेरे मन पर जो अनुग्रह भरा प्रभाव हुआ, परमेश्वर ही उसका कारण हैं। और मैं अब उस समारोह में जा रहा हूँ जहाँ मुझे एक प्रचारक नियुक्त करने वाले है।

- चुनीहुई।